3 महात्मा गांधी और स्व-निर्भरता

उद्देश्य अक्सर व्यक्ति से बड़ा होता है। निश्चित तौर पर चरखा मुझसे बड़ा है। मेरी राय में, इसके साथ भारतीय मानव जाति का जो समग्र हित है, वह भी जुड़ा हुआ है।

– मोहनदास करमचंद गांधी

गांधी जी के विश्वास की पहली चीज़, जैसा उन्होंने स्वयं कहा है, अहिंसा है। अत: वह ऐसे समाज को स्वीकार नहीं कर सकते, जिसमें हिंसा हो। उन्होंने कहा है कि वास्तव में सच्ची सभ्यता वहाँ है, जहाँ उद्योगों का प्रवेश नहीं हुआ है और उनका प्रभाव नहीं पड़ा है। ब्रिटिश शासन के माध्यम से उद्योगों के प्रभाव को महसूस करने से पूर्व भारत इस वास्तविक सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता था।

स्व-निर्भरता और हस्तशिल्प के बारे में महात्मा गांधी के विचार प्रत्यक्ष रूप से उद्योगों और औद्योगिक समाज के बारे में उनके विचारों से संबंधित थे। गांधी जी का विश्वास था कि औद्योगिक समाज वस्तुओं के असीमित उत्पादन पर आधारित है। इससे लालच पैदा होता है और प्रतियोगिता बढ़ती है। इसका अंतिम परिणाम हिंसा और युद्ध होता है।

मुझे मशीनरी के लिए आतुरता पर आपत्ति है। यह उस चीज़ के लिए आतुरता है, जिसे वे श्रम बचाने वाली मशीनरी कहते हैं। व्यक्ति श्रम की बचत करता है, जब तक कि हज़ारों लोग बेरोज़गार न हो जाएँ और सड़कों पर भूखे मरने के लिए न आ जाएँ। मैं समय और मेहनत दोनों की बचत करना चाहता हूँ, लेकिन मानव जाति के कुछ हिस्से के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए। मैं चाहता हूँ कि धन का संकेंद्रण केवल कुछ ही लोगों के हाथ में न होकर सभी के हाथ में हो।

– मोहनदास करमचंद गांधी
यंग इंडिया, 13 नवंबर 1924
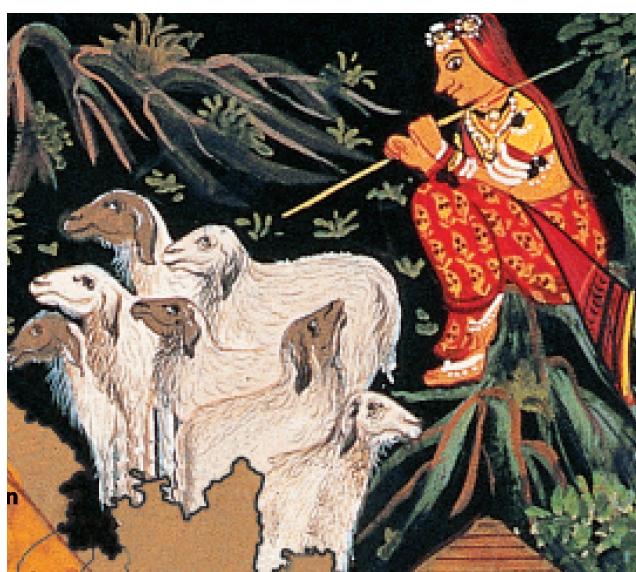
बीसवीं शताब्दी में भी गांधी जी ने तर्क दिया कि भारत में ऐसे क्षेत्र ढूँढ़ना संभव है, जो उद्योगों से अछूते हैं। भारत और उसकी सभ्यता का भविष्य उन गाँवों में है, जिन पर परस्पर आदान-प्रदान और स्व-निर्भरता के साधारण मानक शासन करते हैं। गांधी जी चाहते थे कि इन गाँवों, इनकी शिल्प अर्थव्यवस्था और उनकी पद्धतियों का पुनरुद्धार हो और ये ऐसी प्रणाली का प्रतिनिधित्व करें, जो उद्योग पर आधारित पश्चिम समाजों से पूर्णतया भिन्न हो। हस्तशिल्प के बारे में उनके विचार इस दृष्टिकोण का ही हिस्सा थे।

स्वराज का अर्थ

गांधी जी ने अपना यह दृष्टिकोण कई लेखों में और उल्लेखनीय रूप से, 1909 में *हिंद स्वराज* में लिखे एक विवेचनात्मक निबंध में व्यक्त किया है। यह लेख उन्होंने ब्रिटेन से लौटते हुए जहाज़ में बैठकर लिखा था। इसमें उन्होंने ऐसे आत्मनिर्भर ग्रामीण गणतंत्र के बारे में लिखा, जहाँ पर ऐसे लोग निवास करते हों, जिनका जीवन स्व-विनियमित हो। गांधी जी के सिद्धांत के अनुसार राष्ट्र के लिए स्वराज का अर्थ मात्र ब्रिटिश शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं है। उनके लिए स्वराज इससे बढ़कर है, जिसमें व्यक्तियों की स्वतंत्रता शामिल है, जिससे कि वे एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाए बगैर अपने जीवन को विनियमित कर सकें। उनका स्वराज वह था, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं का शासक हो और उसके पास अपने जीवन को नियंत्रित और विनियमित करने की क्षमता हो। इससे समाज में ताकत और रुतबे की असमानता समाप्त हो जाएगी और समुचित रूप से परस्पर आदान-प्रदान होगा।

गांधी जी निश्चित तौर पर नहीं चाहते थे कि ब्रिटिश शासन के स्थान पर कोई ऐसा शासन आए,

जिसमें शासन और नागरिक समाज की पश्चिमी संस्थाओं को अंग्रेज़ों की बजाय भारतीयों द्वारा चलाया जाए। यह 'अंग्रेज़ों के बिना अंग्रेज़ी शासन' जैसा होता। उन्होंने लिखा है कि ''यह प्रक्रिया भारत को अंग्रेज़ बना देगी और जब यह अंग्रेज़ बन जाएगा, तो हिन्दुस्तान नहीं कहलाएगा, बल्कि इंग्लिस्तान कहलाएगा। यह वह स्वराज नहीं है, जो मैं चाहता हूँ।'' गांधी जी के दृष्टिकोण से स्वराज न केवल ब्रिटिश राजनीतिक नियंत्रण के क्षेत्र के बाहर होना चाहिए, अपितु पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से भी परे होना चाहिए।

स्व-निर्भरता के विचार को फैलाना

भारतीयों को सभी ग्रामीण कलाओं और शिल्पों का पुनरुद्धार और संरक्षण करना होगा, तभी यह सब संभव होगा। शिल्प के अंतर्गत गांधी जी ने कताई और बुनाई पर सबसे अधिक ज़ोर दिया। उन्होंने लिखा, ''वह कौन सी सेवा है, जिसकी भारत के करोड़ों लोगों को वर्तमान समय में आवश्यकता है, जिसे सभी समझ सकें और उसकी सराहना कर सकें, जो करने में सरल हो और साथ ही साथ हमारे करोड़ों भूख से पीड़ित लोगों को जीवित रख सके? और उत्तर आया कि यह खादी का वैश्वीकरण या चरखा चलाना है, जो इन शर्तों को पूरा कर सकता है।" कताई भारतीय हस्तशिल्प का अभिन्न पहलू है, जिसे कि आम आदमी के जीवन का अनिवार्य अंग बनाया जाए। इससे आम आदमी आत्म-निर्भर होगा और जीवित रह सकेगा। यदि भारत के गरीबों को खुशहाल होना है, तो उन्हें व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्रोत की आवश्यकता है। वे केवल कृषि पर ही निर्भर नहीं रह सकते। गांधी जी ने सुझाव दिया कि हाथ से कताई और कुछ हद तक हाथ से बुनाई सहायक स्रोत बन सकता है। उन्होंने टिप्पणी की कि "इस उद्योग ने भारत में डेढ़ सौ वर्ष पूर्व तरक्की की थी और उस वक्त हम इतने अधिक गरीब नहीं थे, जितने अब हैं।"

इस प्रकार, गाँवों को मिलों और मशीनरी पर कम निर्भर रहना होगा। गांधी जी के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण था क्योंकि मशीनें औद्योगिक समाज का एक साधन थीं। वे बड़ी मात्रा में उत्पादन करती थीं। अतः खादी के प्रसार से मिलों और मशीनों के प्रभाव तथा इंग्लैंड से भारत में होने वाले कपास के आयात को चुनौती मिलेगी और भारत के लोग स्वयं को हिंसा किए बगैर उद्योगों के नकारात्मक प्रभावों और उनसे उत्पन्न होने वाली अवश्यंभावी हिंसा से मुक्त करने में सक्षम होंगे।
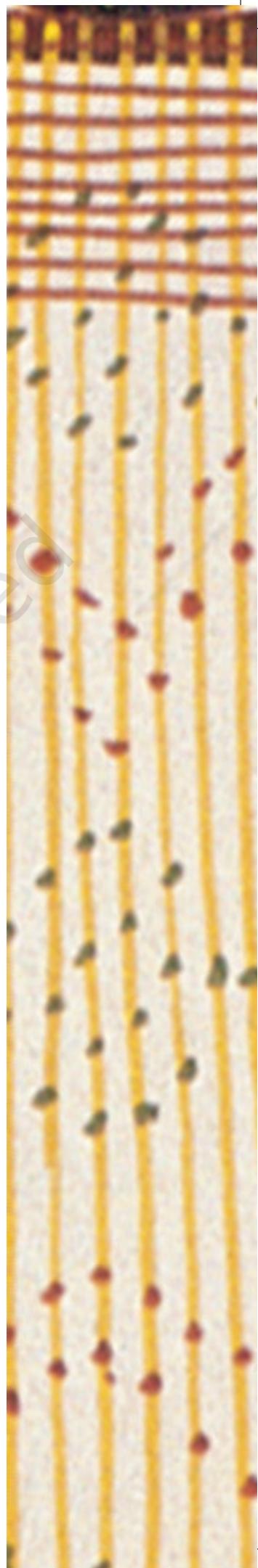
1921 में, दक्षिण भारत के दौरे के दौरान, गांधी जी ने अपना सिर मुंडवा लिया और विदेश से आयातित होने वाले मिल से बने कपड़े के बजाय खादी की धोती पहननी शुरू कर दी, ताकि वे गरीबों को साथ लेकर चल सकें। उनकी नयी वेश-भूषा संन्यास और त्याग की उन दो विशेषताओं का भी प्रतीक थी, जिनका उन्होंने आधुनिक विश्व की उपभोक्तावादी संस्कृति के विरोध में प्रचार किया। गांधी जी ने पश्चिमी वेश-भूषा पहनने वाले राष्ट्रीय नेताओं को भी भारतीय वेश-भूषा पहनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उन सभी से अनुरोध किया कि वे प्रतिदिन कुछ समय चरखे पर बिताएँ। उन्होंने उनसे कहा कि चरखा चलाने से पारंपरिक जाति प्रथा के भीतर मानसिक श्रम और हाथ से किए जाने वाले परिश्रम के मध्य जो सीमाएँ हैं, उन्हें तोड़ने में सहायता मिलेगी।

– *यंग इंडिया,* 13 नवंबर 1924

गांधी जी साथ-ही-साथ कई अन्य कार्य भी कर रहे थे। वे एक हस्तशिल्प का पुनरुद्धार कर रहे थे, जो कि ग्रामीण जीवन का महत्त्वपूर्ण घटक था। उनका मत था कि कताई और बुनाई के पुनरुद्धार से लोग बेहतर ढंग से जीवनयापन कर सकेंगे क्योंकि उनके पास आजीविका का अन्य स्रोत भी होगा। लोग और गाँव अधिक स्व-निर्भर होंगे। साथ ही, उद्योगवाद के बुरे प्रभावों से लड़ने का जो अधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है, उसकी भी पूर्ति हो जाएगी।

एक कुचक्र

कर, प्रशुल्क और अन्य प्रतिबंधों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार ने भारत में सूती कपड़े के उत्पादन को हतोत्साहित किया और इसकी बजाय प्रसंस्करण हेतु कच्चा माल इंग्लैंड भेजा। गांधी जी ने इस प्रक्रिया को निम्नवत् बताया है–

1. अंग्रेज़ लोग वैकल्पिक एकाधिकार के माध्यम से भारतीय मज़दूर द्वारा सात सेंट प्रतिदिन के हिसाब से खेत से चुनी गई भारतीय कपास को खरीदते हैं।
2. इस कपास को ब्रिटिश जहाज़ों में हिंद महासागर, लाल सागर से भूमध्यसागर होते हुए जिब्राल्टर के रास्ते, बिस्के की खाड़ी को पार करते हुए अटलांटिक महासागर से होते हुए तीन सप्ताह की यात्रा कर लंदन ले जाया जाता है। इस मालभाड़े पर सौ प्रतिशत लाभ को भी कम माना जाता है।
3. लंकाशायर में कपास को कपड़े में बदला जाता है, जहाँ कामगारों को भारतीय मुद्रा के बदले शिलिंग में मज़दूरी दी जाती है। अंग्रेज़ी कामगार को न केवल अच्छी मज़दूरी मिलती है, अपितु इंग्लैंड की स्टील कंपनियों को भी फ़ैक्ट्रियाँ और मशीनें बनाने का लाभ मिलता है। मज़दूरी, लाभ – यह सभी कुछ इंग्लैंड में ही व्यय होता है।
4. अंतिम उत्पाद को यूरोपीय शिपिंग दरों पर एक बार फिर ब्रिटिश जहाज़ों से भारत भेजा जाता है। इन जहाज़ों के कैप्टन, अधिकारी और नाविक, जो अंग्रेज़ हैं, उन्हें मज़दूरी अवश्य दी जाती है। इनमें लाभ पाने वाले भारतीयों में केवल वे कुछ नाविक हैं, जो प्रतिदिन कुछ सेंट के लिए नावों में अस्वच्छ (तुच्छ) कार्य करते हैं।
5. इस कपड़े को अंततः भारत के राजाओं और ज़मींदारों को बेचा जाता है। इस महँगे कपड़े को खरीदने के लिए धन उन गरीब किसानों से प्राप्त किया जाता है, जो स्वयं सात सेंट प्रतिदिन के लिए काम करते हैं।

– लुई फ़िशर, 1932
द लाइफ़ ऑफ़ महात्मा गांधी
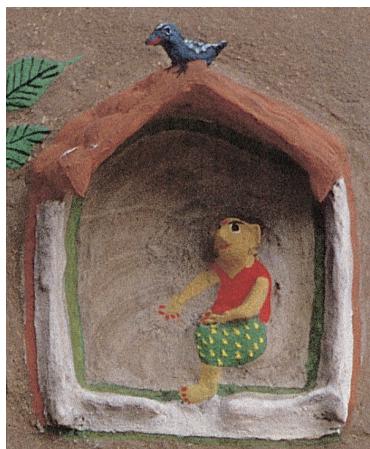
भारत के स्वतंत्र होने से कुछ माह पूर्व गांधी जी ने लिखा था–

चरखा हमारे झंडे का केंद्र है। यह करोड़ों लोगों की एकता और अहिंसक शक्ति का प्रतीक है। चरखे द्वारा काते गए सूत को मैं एकता के बंधन में बाँधने वाली ताकत मानता हूँ, जो कि उन सभी को बाँध सकता है, जिन्हें झंडे के तीन रंग दर्शाते हैं। इसीलिए मैंने कहा है कि स्वराज का पूर्ण सार इस हाथ से बुने हुए सूत के धागे में है और इसलिए मैं चरखे को अपना सबसे शक्तिशाली शस्त्र कहता हूँ।

स्व-निर्भर गाँव

गांधी जी के लिए स्व-निर्भरता का विचार सबसे अधिक महत्त्व का था। एक व्यक्ति, गाँव और देश तभी स्वतंत्र हो सकता है, जब वह स्व-निर्भर हो। गांधी जी के अनुसार आदर्श भारतीय गाँव निम्न प्रकार का था –

प्रत्येक गाँव का पहला ध्येय होगा कि वह अपनी खाद्य फ़सलें उगाए और अपने कपड़े के लिए कपास उगाए। इसके पास पशुओं के लिए सुरक्षित भंडार होना चाहिए, वयस्कों और बच्चों के लिए मनोरंजन के साधन और खेल का मैदान होना चाहिए। यदि और अधिक भूमि उपलब्ध हो तो यह उपयोगी नकदी फ़सलें उगा सकते हैं, जिसमें गाँजा, तंबाकू, अफ़ीम इत्यादि न हो। गाँव में एक थियेटर, स्कूल और सार्वजनिक हॉल होगा। इसकी स्वयं की जल-आपूर्ति व्यवस्था होगी, जो स्वच्छ जल-आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। कुओं अथवा टैंकों के माध्यम से ऐसा नियंत्रित किया जा सकता है। अंतिम मूलभूत पाठ्यक्रम तक शिक्षा अनिवार्य होगी। जहाँ तक संभव हो, प्रत्येक कार्यकलाप सहकारिता के आधार पर आयोजित किया जाएगा।

गांधी जी ने हस्तशिल्पों, विशेषकर कताई और बुनाई के महत्त्व पर बल दिया। लेकिन उन्होंने अन्य हस्तशिल्पों का भी उल्लेख किया, जो प्रत्येक ग्रामीण के पैतृक व्यवसाय का भाग थे। उनका मानना था कि हस्तशिल्पों के विकास से व्यक्ति और गाँव के समग्र संसाधनों में वृद्धि होगी और दोनों स्व-निर्भर और स्व-विनियमित बन जाएँगे। उनके लिए अहिंसा पर आधारित संसार उन्हीं स्थानों पर हो सकता था, जो उद्योगों से अछूते हों। उनके अनुसार भारतीय गाँव ही ऐसे स्थान थे क्योंकि उनके समय में, उनका विश्वास था कि वे अभी भी अपेक्षाकृत उद्योगों से अछूते हैं। उनके विचार से गाँवों के पुनरुद्धार के लिए, उन्हें स्व-निर्भर बनाने के लिए और व्यक्ति को स्वयं का जीवन विनियमित करने का सम्मान प्रदान करने के लिए, हस्तशिल्प उनके कार्यक्रम का अभिन्न और महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। यह गांधी जी के दृष्टिकोण की चुनौती है, जिसे भारत को अभी पूरा करना है।

बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी एकमात्र व्यक्ति थे, जिन्होंने भारतीय शिल्प को ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राजनीतिक स्वतंत्रता की संकल्पना के साथ जोड़कर उस पर पूर्ण ग्रहण लगने को सफलतापूर्वक रोका। उन्होंने लोगों से यह कहा कि वे अपने लिए ऐसा कपड़ा तैयार करें, जो अंग्रेज़ों द्वारा तैयार न किया जाता हो। उसके लिए घर पर ही सूत कातें। इस तरह उन्होंने साधारण से चरखे को चुनौती का प्रतीक बना दिया और यह आत्मविश्वास और स्वतंत्रता का अहिंसक और सृजनात्मक हथियार बन गया।
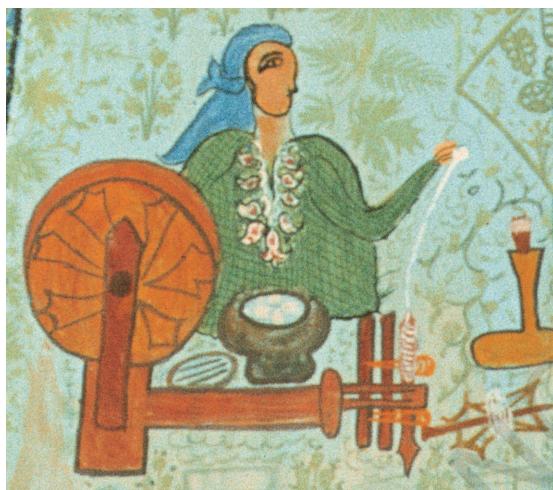
अभ्यास

1. *"स्वराज का पूर्ण सार इस हाथ से बुने हुए सूत के धागे में है और इसलिए मैं चरखे को अपना सबसे शक्तिशाली शस्त्र कहता हूँ।"* गांधी जी के स्वराज की इस अवधारणा को समझाएँ।
2. गांधी जी के स्वावलंबी ग्राम की धारणा समझाएँ। क्या आपके विचार से आज भारत में यह संभव है? अपने तर्कों को उदाहरण के साथ सिद्ध करें।
3. गांधी जी के दर्शन के एक आवश्यक अंग के रूप में खादी के अर्थ को वर्णित करें। साथ ही आज के संदर्भ में उसका प्रतीकात्मक अर्थ बताएँ।
4. 'मेरे सपनों का भारतीय ग्राम' विषय पर एक लेख लिखें।
5. आज के वैश्विक परिवेश में अपने इलाके के किसी हस्तशिल्प को बचाने के लिए कार्यनीति निर्धारित करें।